

नव वर्ष में राष्ट्र का मंगल

आप का नव वर्ष मंगलमय हो

धूर्त कुछ हैं चाहते बस बैलगाड़ी ही चले ।

बांटते गेहूं रहें ये प्रजा के बनकर भले।

रहें छिपकर लूटते ये मातृभू की संपदा ।

अतः है जनजागरण उत्थान इन को आपदा ॥ १ ॥

छद्म शिक्षित चाहते हैं यहाँ जन को हांकना ।

पुनः भारत वर्ष को ये चाहते हैं बाँटना ।

अब नहीं पर्याप्त है इन कण्टकों को छाँटना ।

अब हमें विष वृक्ष को ही मूल से है काटना ॥ २ ॥

हिंसना ,छल, भोग ही जिनके लिये पटु धर्म है।

देश निर्बल करण प्रेरित ही सदा सब कर्म है।

पापरत जिनकी सदा निज स्वार्थ में अनुरक्ति है ।

जिन्हे प्रिय परद्रव्य, परजायार्थ बहु आसक्ति है ॥ ३ ॥

क्रमिक, दृढ़, उच्छेद बलपूर्वक उन्ही का विहित है ।

राष्ट्र रक्षा मंत्र इस उच्छेद में ही निहित है ।

युद्ध ही जिनके लिए सुख शान्ति का पर्याय है ।

पूर्ण पेषण अचिर उनका यही शुभतर न्याय है ॥ ४ ॥

छिद्र करने को समुत्सुक देश के जलयान में ।

और उनके समर्थक कुछ कुटिलतर अभियान में ।

जानलें जागी भरत भू , अब अभय को त्याग दें ।

जलेंगे वे भी, न आगे, राष्ट्रहित को आग दें ॥ ५ ॥

हों वे पराजित आशु ही भ्रमजाल जो हों बुन रहे ।

निज अल्पबल के ही प्रदर्शन को समद हो चुन रहे ।

सब जानलें भयजनन में अब वे नहीं सक्षम यहां ।

जब सजग भारतवर्ष है तो भेद का अवसर कहां ॥ ६ ॥

मंगल हमारा भी सुनिश्चित है तभी नव वर्ष में ।

जब सर्वथा हो पराजय इनकी विषम संघर्ष में ।

जो भी बने बाधा हमारे राष्ट्र के निर्माण में ।

बस श्रेय हम हैं देखते उनके अचिर निर्याण में ॥ ७ ॥